विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2562, कार्तिक पूर्णिमा, 23 नवंबर, 2018, वर्ष 48, अंक- 3/4/5

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मुना वसलो होति, कम्मुना होति ब्राह्मणो॥
सुत्तनिपातपाळि-वसलसुत्तं-142.

न कोई जन्म से वृषल (चांडाल) होता है न ही जन्म से ब्राह्मण।
कर्म से ही कोई वृषल होता है, कर्म से ही ब्राह्मण।

वि. साधना एवं धर्म-प्रसार की स्वर्ण जयंती पर पूज्य गुरुजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का सुअवसर

विपश्यना साधना के पुनरुत्थान की 50वीं वर्षगांठ, यानी, 3 जुलाई 2018 से 2 जुलाई 2019 तक वर्ष भर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में प्रतिदिन एक दिवसीय शिविर नियमित रूप से चलते रहेंगे, ताकि यह वर्ष साधकों को दैनिक साधना पुष्ट करने में सहायक हो। यानी, जिस साधक-साधिका को जिस दिन भी समय मिले, इन शिविरों का लाभ उठा सकते हैं। इससे साधकों की साधना में निरंतरता और नियमितता आयेगी और उनसे प्रेरणा पाकर अधिक से अधिक लोगों में सद्धर्म के प्रति जागरूकता पैदा होगी और वे भी शिविरों में सम्मिलित होकर अपना कल्याण साध सकेंगे। अन्य स्थानों पर भी लोग इसी प्रकार दैनिक साधना, सामूहिक साधना तथा एक दिवसीय शिविरों द्वारा इसके व्यावहारिक अभ्यास को पुष्ट करें, यही पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और सही कृतज्ञता होगी।

विश्व विपश्यनाचार्य पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी के शुद्ध धर्म के संपर्क में आने के पूर्व की इन घटनाओं से और बचपन से युवावस्था तक के उनके भक्तिभाव से कोई भ्रम नहीं पैदा हो, बल्कि यह प्रेरणा मिले कि ऐसा व्यक्ति भी किस प्रकार बदल सकता है, इसी उद्देश्य से उनके संक्षिप्त **जीवन-परिचय** की यह **तीसरी कड़ी**:--

कृष्ण के प्रति असीम श्रद्धा

क्रमशः (पिछले अंक से आगे) ... व्यापारिक क्षेत्र में पहले ''मारवाड़ी चैंबर ऑफ कॉमर्स'' का अध्यक्ष बना और फिर बरमी नागरिकता ग्रहण कर लेने पर ''रंगून चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज'' का भी अध्यक्ष बना। ऊ नू सरकार के व्यापार मंत्री ऊ औं के मंत्रालय में व्यापार-संबंधी परामर्श के लिए भी चुना गया।

व्यापार में सफलता प्राप्त करते हुए मैंने अपने परिवार के अनेक औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित किये और उनमें आशातीत सफलताएं प्राप्त कीं। सरकार से सदैव बहुत अच्छे संबंध बने रहने के कारण ऊ नू सरकार में ही नहीं, बल्कि सैनिक सरकार के समय भी दो बार सरकारी प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेश गया और वहां महत्त्वपूर्ण परिणाम हासिल किये।

इन सभी अविश्वसनीय सफलताओं का सारा श्रेय मैं अपने इष्टदेव को ही देता रहा। बचपन में जो चित्र मैंने अपनी जेब में रखा, वह सदा ही मेरी जेब में रखा जाता रहा, विदेशों की यात्रा करता तब भी। मेरे मानस पर गीताप्रेस गोरखपुर की तरल भक्ति का गहरा प्रभाव था और मैं अपने इष्टदेव का चित्र सामने रख कर प्रात: आध घंटे तक नित्य सजल नेत्रों से प्रार्थनाएं गाया करता और सदैव भक्तिरस में आकंठ डूबा रहता था। मेरे ईश्वर श्रीकृष्ण की गहन भक्ति मुझे कदम-कदम पर सहायता कर रही है, यह विश्वास दृढ़ से दृढ़तर होता चला गया।

बचपन में तीसरी से दसवीं कक्षा तक स्थानीय खालसा स्कूल में शिक्षा प्राप्त करता रहा। वहां गुरुवाणी का भी मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इससे

पूज्य श्री गोयन्काजी एवं पूज्य माताजी धम्मगिरि के धम्म-कक्ष में बैठे हुए.

अधिक प्रभाव आर्य समाज की शिक्षा से पड़ा जिसका भवन हमारे घर के बिल्कुल समीप था। परंतु उस प्रभाव के कारण भी मैं सगुण साकार की भक्ति छोड़ कर, निर्गुण निराकार की ओर बिल्कुल नहीं मुड़ा, क्योंकि मैं उसे भक्ति के योग्य नहीं समझता था। फिर भी आर्य समाज की अन्य अनेक मान्यताओं का मेरे मानस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

उस किशोर अवस्था में ही समाज की अनेक कुरीतियों को दूर करने की प्रबल आकांक्षा जाग उठी। उनमें से जिसका सबसे गहरा प्रभाव पड़ा वह यह था कि जन्म के आधार पर लोगों को ऊंची या नीची जाति का मान लेना मुझे बहुत अखरता था। इसी कारण मैंने अपने अति उत्साह के वशीभूत होकर आर्य समाज मंदिर में निम्न जाति के कुछ लोगों को यज्ञोपवीत पहनवाया और उन्हें ऊंची जाति का घोषित किया। परंतु अनुभवहीन उत्साह में किया गया मेरा यह प्रयास बिल्कुल असफल रहा। सुदृढ़ सामाजिक परंपराओं के कारण वे सब अपनी पूर्व स्थिति में लौट गये। मैंने पुन: प्रयास किया, परंतु लाचारी थी। पुरातनवादी समाज की व्यवस्था इतनी कठोर थी कि उसमें कोई सुधार करने की गुंजाइश ही नहीं थी।

इसी प्रकार नवयुवावस्था में ही समाज में होने वाले एक वृद्ध-विवाह का पुरजोर विरोध किया। मेरे एक युवा मित्र की पत्नी का निधन हुआ। उन्हीं दिनों समाज की एक छोटी उम्र की बालिका विवाह होते ही विधवा हो गयी। हम नवयुवकों ने मिल कर आंदोलन किया और अपने विधुर मित्र को उस बाल-विधवा से विवाह करने के लिए तैयार कर लिया। हमारे दबाव से वह तैयार तो हो गया परंतु इसके कारण समाज में बड़ा तहलका मचा। मेरे विधुर मित्र के पिता ने गंगा (इरावदी) में डूब मरने की धमकी दी और परिणामस्वरूप यह विवाह संपन्न न हो सका।

परंतु इन कारणों से मैं समाज के सर्वमान्य नियमों का विरोधी मान लिया गया। इन भिन्न-भिन्न प्रयासों की असफलताओं के कारण मैं समाज

के बड़े बुजुर्ग नेताओं की नजरों से गिर गया।

फिर भी मुझ पर आर्य समाज का प्रभाव प्रबल होता गया और मेरी सुधारक प्रवृत्ति बलवती होती गयी। मेरे दोनों बड़े भाई बालकृष्ण और बाबूलाल का विवाह लगभग पंद्रह वर्ष की अवस्था में हुआ जबकि शारदा-ऐक्ट (बाल-विवाह निषेध अधिनियम १९२९) के अनुसार अठारह वर्ष पूरे होने पर ही किया जाना चाहिए था। जब मेरी बारी आयी तब मैं इस बात पर अड़ गया कि मेरा विवाह अट्ठारह वर्ष पूरे होने पर ही किया जाय। घरवालों को और समाज को मेरा यह निर्णय स्वीकार्य नहीं था। लेकिन एक सुखद संयोग ऐसा हुआ कि भारत से आया हुआ एक प्रसिद्ध ज्योतिषी पड़ोस के आर्य समाज भवन में कुछ दिनों के लिए रुका। उसने मेरी हस्तरेखाएं देख कर कहा कि मेरी आयु लंबी होगी परंतु अठारह वर्ष के आसपास मृत्यु का खतरा है। यह सुन कर मैं बहुत खुश हुआ और उसे घर ले गया। वहां उसने अनेकों की हस्तरेखाएं देखीं और अपने विचार व्यक्त किये। मेरी बारी आने पर उसने वही बात दुहराई कि अठारह वर्ष होते-होते मृत्यु का खतरा है। मेरा काम बन गया। मैंने अपनी माता से कहा कि अठारह वर्ष के पहले किसी बेकसूर लड़की का मुझसे विवाह कर दिया जायगा तो उसका भविष्य दु:खों से भर जायगा। मां बहुत दयालु थी। उसने मेरे इस कथन का समर्थन किया कि अठारह वर्ष पूरे होने पर ही मेरा विवाह किया जाय।

मेरे विद्रोही स्वभाव की एक और घटना। दोनों बड़े भाइयों का यज्ञोपवीत (उपनयन संस्कार) भी पन्द्रह वर्ष की उम्र में हो गया था। मैं जब इस उम्र पर पहुँचा तो परिवार के पुश्तैनी पुरोहित का दुराचरण समाज में कुख्यात हुआ। मैं इस बात पर अड़ गया कि किसी दुराचारी व्यक्ति को मैं अपना गुरु नहीं बना सकता। पिताजी ने घर में बने मंदिर में नित्यप्रति पूजापाठ करने के लिए एक पुरोहित को नियुक्त कर रखा था। अब उसके हाथों यज्ञोपवीत लेने का दबाव पड़ने लगा। परंतु थोड़े समय में ही उसके भी दुराचार की सच्चाइयां सामने आयीं और मैं फिर उसके हाथों यज्ञोपवीत लेने को तैयार नहीं हुआ। उस समय बहुत बड़ा दबाव पड़ने पर मैंने यह प्रस्ताव रखा कि मैं आर्य समाज के तत्कालीन चरित्रवान व्यक्ति पंडित मंगलदेवजी शास्त्री को अपना गुरु स्वीकार कर सकता हूं और उनके हाथों उपनयन संस्कार करवा सकता हूं। लेकिन उन दिनों मांडले में आर्यसमाजियों और सनातनी हिंदुओं में बहुत गहरा मतभेद था और परिणामत: तनाव भी था। अत: घरवाले कट्टर सनातनी होने के कारण मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सके और मैं यज्ञोपवीत धारण किये बिना ही रह गया। इसके पश्चात मैं आज तक यज्ञोपवीत नहीं ले सका। सोचता हूं जो हुआ वह अच्छा ही हुआ।

उन्हीं दिनों मेरे मानस में विद्रोह की एक प्रबल चिनगारी फूटी। तब मुझे विश्वास नहीं था कि यह शीघ्र ही इतनी प्रबल अग्नि का रूप धारण कर लेगी।

आर्य समाज से गंभीरतापूर्वक प्रभावित हो जाने पर उनकी समाज सुधार की बातें मैंने मान ली थीं परंतु सगुण साकार की भक्ति में डूबा हुआ मेरा मानस निर्गुण निराकार की ओर नहीं बढ़ सका। मुझे समझ में ही नहीं आ रहा था कि निर्गुण निराकार की भक्ति कैसे हो सकती है।

अनेक असफलताओं के बावजूद श्रीकृष्ण के प्रति मेरी भक्ति में जराभी आंच नहीं आयी। प्रतिदिन प्रात:काल मैं भावभीने भक्ति के गीत गाता और साथ-साथ गीता का अध्ययन भी करता रहा। मैंने देखा कि महाभारत में भाइयों में जो परस्पर युद्ध हुआ, उसमें देश के अगणित योद्धा मारे गये और अनेक दुर्लभ अस्त्र-शस्त्र नष्ट हुए। मैं इसे अच्छा कैसे मानता? लेकिन मेरे इष्टदेव ने गीता में स्थितप्रज्ञता की जो व्याख्या की, वह मन को बहुत भायी और उसे जीवन में उतारने की ललक जाग्रत हुई।

इसी गीता में मैंने पढ़ा कि चातुर्वर्ण की व्यवस्था उनके गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर ही मेरे इष्टदेव द्वारा की गयी है--

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश:।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।।
--गीता 4/13

चार वर्णों की सृष्टि मेरे द्वारा गुण, कर्म और आचरण के आधार पर की गयी। ऐसा होने पर भी मुझ अविनाशी कर्ता को अकर्ता के रूप में ही जानो।

लेकिन इसके बावजूद यह देख कर पीड़ा हुई कि गुण, कर्म, स्वभाव वाली वर्णव्यवस्था जन्म के आधार पर कैसे परिवर्तित हो गयी ? कैसे एक सही व्यवस्था को कुछ लोगों ने अपने और अपनी भावी संतति के लिए 'मनुस्मृति' जैसे ग्रंथ की रचना करके उसे बदल दिया। इस परिवर्तन के कारण निम्न जाति पर उच्च वर्ण द्वारा जो अत्याचार हुआ उसे देख कर म्यंमा में रहते हुए भी दु:खी रहता था और अब भारत पहुँच कर इस जाति की वही दुर्दशा देखी तब विद्रोह का यह भाव जाग्रत हुआ कि मेरे परम ईश्वर ने जो सुंदर और सही वर्णव्यवस्था स्थापित की थी, उसे जाति का अहंकार लेकर इतना दूषित कैसे कर दिया गया? कर दिया यह तो सत्य है परंतु मैं सोचने लगा कि मेरा इष्टदेव तो परम परमेश्वर है, सर्वशक्तिमान है। वह इस दूषण को सुधार क्यों न सका? जिन्होंने अपने स्वार्थवश पुरातन स्वस्थ व्यवस्था को दूषित किया, उन्हें कठोर से कठोर दंड क्यों नहीं दिया गया ?

मैं विद्यार्थी जीवन से ही देख रहा था कि ऊंच-नीच और छुआ-छूत का यह समाजविरोधी प्रचलन कितना उग्र बन चुका था। मेरी कक्षा में गुरुचरण सिंह नामका मेरा एक सहपाठी था जो कि चुहड़े (भंगी) का पुत्र था। वह मेरे साथ एक ही बेंच पर बैठता था जिसे मेरे समाज के अन्य विद्यार्थी बहुत बुरा मानते थे। भोजन के समय हम दोनों अपने-अपने घर से लाया हुआ भोजन उसी बेंच पर बैठ कर साथ-साथ खाते थे। उसका भोजन मैंने कभी नहीं चखा। लेकिन फिर भी एक अछूत जाति के विद्यार्थी के साथ एक ही बेंच पर बैठ कर भोजन करना मेरे अनेक विद्यार्थी बंधुओं को बहुत बुरा लगता था और वे बाहर समाज में भी इसकी चर्चा करते हुए मेरी निंदा करते रहते थे।

मेरी समझ में नहीं आता था कि किसी एक परिवार में जन्म लेने मात्र से कोई व्यक्ति चाहे जितना सच्चरित्र हो फिर भी अछूत माना जाता है और किसी अन्य परिवार में जन्म लेने मात्र से कोई व्यक्ति ऊंची जाति का माना जाता है चाहे वह कितना ही दुश्चरित्र क्यों न हो। यह स्थिति मेरे मन को जरा भी नहीं रुचती थी। मेरे स्कूली जीवन में ही नहीं, बल्कि आगे चल कर भी इस दूषित स्थिति को देख कर मैं कुछ कर नहीं सकता था और दु:खी ही रहता था। जब कभी मैं अपने बड़े बुजुर्गों के साथ रेल की यात्रा करता तब देखता कि जब हम घर से लाया हुआ भोजन करने के लिए उद्यत होते और उसी बेंच पर कोई शिष्ट बरमी बंधु बैठा होता तब भी उससे कहते कि तुम थोड़ी देर के लिए उठ जाओ, अन्यथा हम भोजन नहीं कर सकेंगे। मैं अपने सहपाठी के साथ एक ही बेंच पर बैठ कर भोजन करता था और यहां मेरे बुजुर्ग भोजन करने के लिए एक शिष्ट बरमी बंधु को नीची जाति का मान कर भोजन के समय सीट पर से उठाते थे, यह मेरे मन को बहुत बुरा लगता था। परंतु क्या करता? म्यंमा से भारत आने पर चूरू नगर में रहते हुए भी मैंने ऊंच-नीच और छुआ-छूत की यह अत्यंत अप्रिय पराकाष्ठा देखी। यह सब देख कर अपने ईश्वर श्रीकृष्ण के प्रति प्रगाढ़ भक्ति और श्रद्धा होने पर भी कभी-कभी मेरे मन में प्रबल विद्रोह का भाव जाग उठता था कि जिस ईश्वर ने एक सुंदर वर्णव्यवस्था स्थापित की उसे बिगड़ते देख कर उसे सुधारने के लिए उसने कोई कड़ा कदम क्यों नहीं उठाया?

मैं सोचा करता था हम ब्राह्मण, बनिये के घर में जनमे हैं इसलिए महान हैं और जो तथाकथित नीची जाति में जनमे हैं उन पर कितना अत्याचार करते हैं। यह सब देखते हुए मेरे मन में अपने इष्टदेव के प्रति भक्ति और श्रद्धा होते हुए भी कभी-कभी मेरा विद्रोही स्वभाव जाग्रत हो उठता था। उन दिनों की मेरी एक पुरानी रचना मुझे अब भी याद है--

ब्राह्मण बनिये के घर जन्मे, इससे ही क्या हम हैं महान?
हम उच्च वर्ण, हम सर्वश्रेष्ठ, ऊंचा समाज में बना स्थान।।

मेरी विचित्र स्थिति थी। एक ओर अपने इष्टदेव के प्रति गहन श्रद्धा और दूसरी ओर उसके प्रति गहरे विद्रोह के भाव। ये दोनों भाव मानस में साथ-साथ चलते रहे।

द्रवीभूत भक्ति

मेरा जन्म और लालन-पालन ऐसे माता-पिता के यहां हुआ जो गीताप्रेस

गोरखपुर के भक्तिमार्ग के परम श्रद्धालु पथिक थे। बचपन से मोहन मास्टरजी (मदन मोहन शर्मा) जैसे गुरु के संपर्क में आया जो म्यंमा में गीताप्रेस से प्रकाशित साहित्य के नि:स्वार्थ प्रचारक थे। स्वयं बड़े भावुक भक्त थे। भक्ति के भजन गाते हुए उनका हृदय विह्वल हो जाया करता था और आंखों से अश्रुधारा बहने लगती थी। मैं भी बचपन से ही स्वभावत: बहुत भावुक था। अत: अपने गुरु के प्रभाव के कारण मैं भी सगुण साकार की भक्ति से अभिभूत होकर अक्सर अश्रुमुख हो जाया करता था। मुझे खूब याद है कि लगभग सात वर्ष की अवस्था में जब मैं गीताप्रेस से प्रकाशित 'भक्त बालक' या 'भक्त नारी' जैसी पुस्तक अपनी माता को पढ़ कर सुनाता तो बहुधा द्रवीभूत हो उठता। आंखों से अश्रुधारा बहने लगती। मैं देखता कि भक्तिभाव की उस कथा को सुनते-सुनते मेरी मां की आंखों से भी आंसू बहने लगते और वह बहुत बार मुझे गोद में बैठा कर छाती से लगा लेती। मैं कहता– 'मां, मैं ध्रुव बनूंगा।' वह कहती– "हां बेटा, तू ध्रुव बनेगा।" इसी द्रवीभूत भक्ति में मैं वर्षों निमग्न रहा।

पिताजी शिव-भक्त थे, अत: शिव मेरे उपास्य देव बने। माता कृष्ण भक्त थी, अत: कृष्ण भी मेरे उपास्य देव बने। मेरे बाबा का बुद्ध के प्रति बहुत झुकाव था। वे मांडले के सत्यनारायण मंदिर में जायें या न भी जायें, परंतु प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक बार मांडले के उपनगर सांजू में स्थित पुरातन ऐतिहासिक महामुनि मंदिर में अवश्य जाते थे। मैं भी उनके साथ हो लेता। उस भव्य मंदिर में भगवान बुद्ध की प्रतिमा का शांत, ध्यान निमग्न चेहरा मुझे बहुत आकर्षक लगता। मैं उसे देर तक अपलक नयनों से देखता रहता। मंदिर के विशाल प्रांगण में भक्तों की भीड़ होते हुए भी स्वच्छता और नीरव शांति का साम्राज्य बना रहता। यह मेरे बाल-हृदय को बहुत प्रिय लगता। बाबा उस शांत वातावरण में बहुत देर तक आंख बंद करके पालथी मारे मौन बैठे रहते। मैं नहीं जानता कि वे किसी प्रकार का ध्यान करते थे अथवा मंदिर की नीरव शांति का मौन रसास्वादन करते थे। बहुधा मैं भी उनके पास पालथी मार कर बैठ जाता। मुझे यह बहुत रुचिकर लगता। अब भगवान शिव और श्रीकृष्ण के साथ साथ भगवान बुद्ध भी मेरे उपास्य हो गये। यद्यपि हमारे घर के मंदिर में रवि वर्मा के बनाए हुए बड़े साइज के जो दो चित्र लगे थे, वे भगवान शिव और श्रीकृष्ण के ही थे। परंतु बुद्ध के प्रति अपनी श्रद्धा भक्ति महामुनि मंदिर में बार-बार जाकर पुष्ट किया करता था।

महादेवजी नाथानी

मेरे एक बहनोई थे- महादेवजी नाथानी, जो परिवार के व्यापारिक प्रतिष्ठान में बही-खाता लिखने का काम करते थे। वे मेरी सबसे बड़ी बहन के पति थे, अत: उम्र में मुझसे लगभग बीस वर्ष बड़े थे। उनका जीवन अत्यंत धार्मिक और सात्विक था, त्याग से परिपूर्ण था। उनकी आदर्श जीवनचर्या मुझे बहुत प्रेरित करती थी। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। मैं देखता कभी-कभी कोई संस्कृत-पंडित किसी ग्रंथ के किसी भाग के बारे में उनसे देर तक परामर्श करता। सभी उनकी विद्वता का सम्मान करते थे।

मैं उस छोटी उम्र में ही विष्णुसहस्रनाम, गोपालसहस्रनाम, शिव महिम्नस्तोत्र, शिव तांडवस्तोत्र और श्रीमद्भागवत गीता का पाठ करना सीखने लगा था। वे बहुधा मेरे संस्कृत उच्चारण को सुधारते थे। यह मुझे अच्छा लगता था। उनकी वाणी में बहुत ओज था। वे जब स्वयं रुद्री का पाठ करते तो सारा वायुमंडल मानो मृदंग की आवाज से गूंज उठता।

मैं जब बाबा के साथ महामुनि मंदिर जाकर आता तो बहुत बार वे मुझे समझाते कि बुद्ध भगवान विष्णु के नवें अवतार हैं, अत: हमारे पूज्य हैं। उनके मंदिर में जाकर सिर नवाने में कोई दोष नहीं, पर इस बात का ध्यान रखना, कभी भूल कर भी उनकी शिक्षा के फेर में मत पड़ जाना। उनकी शिक्षा ग्रहण करने योग्य नहीं है। भगवान विष्णु ने बुद्ध के रूप में इसीलिए अवतार लिया था कि वे दुष्ट लोगों को भुलावे में डाल कर उनको ऐसी शिक्षा दें जिससे वे मरने पर स्वर्ग न जाकर नरक जायें। इससे संबंधित किसी शास्त्र के श्लोक भी पढ़ कर सुनाते। अब लगता है कि वे श्लोक अवश्य विष्णु पुराण के ही रहे होंगे। मुझे उनसे कोई वास्ता नहीं था और न ही उस बाल्यावस्था में मैं इतना सोचने समझने लायक था कि किसी को गलत रास्ते ले जाने के लिए ईश्वर का अवतार क्यों होता है? परंतु बहनोई के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव होने के कारण उनकी यह बात मन में गहरी बैठ गयी कि बुद्ध हमारे लिए पूजनीय अवश्य हैं परंतु उनकी शिक्षा सर्वथा अग्राह्य है। ....

(आत्म कथन भाग 2 से साभार) *क्रमशः ...*

पालिताना (गुजरात) में विपश्यना-परिचय एवं आनापान सत्र

धम्मपाली विपश्यना केंद्र के पास पालीताना में दिनांक: ६, ७, ८ अगस्त २०१८ को धर्म चेतना का एक मंगलमय सत्र संपन्न हुआ। इसमें आसपास तथा सुदूर प्रदेशों के १,००० से १,२०० लोग प्रतिदिन वहां आते रहे और विपश्यना-परिचय एवं आनापान ध्यान का लाभ लिया। लगभग सभी लोग विपश्यना के दस दिवसीय शिविर में समिलित होने के लिए उत्सुक हुए। सभी ने ऐसे सत्र स्थान-स्थान पर लगाने की इच्छा व्यक्त की। कुछ लोगो ने "धम्मपाली" में लगने वाले अगले शिविर में आने के लिए आवेदन-पत्र भी दिया, तो गच्छाधिपति आचार्य महाराज ने स्वयं भी शिविर में बैठने की इच्छा व्यक्त की एवं सभी श्रावकों को शिविर करने के लिए उत्साहित एवं प्रेरित किया।

केरल में बाढ़-विभीषिका का प्रभाव विपश्यना केंद्र पर भी

धम्मकेतन, चेंगन्नूर विपश्यना केंद्र बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुका है। पुराने भवनों के अतिरिक्त नवनिर्मित रसोईघर, भोजनालय, महिला निवास आदि सभी क्षतिग्रस्त हो गये हैं। सभी प्रकार की सामग्री, बिजली आदि के सभी सामान, बिस्तर, भोजन सामग्री आदि सब नष्ट हो गयी। सब कुछ नये सिरे से जुटाना होगा, जिसमें पर्याप्त धनराशि मिल जाने पर भी शिविर योग्य बनाने में कई दिन लगेंगे। सहायता के लिए **संपर्क:** श्री रघुनाथ कुरुप, 9495118871. नामः केरल विपश्यना समिति, बैंकः सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, Kollakadavu, A/c. No. 3553134716, IFSC: CBIN0280953. यदि किसी को 80-G आयकर छूट की सुविधा चाहिए तो कृपया 'केरल विपश्यना केंद्र के लिए' लिखते हुए चेन्नई के निम्न खाते में भेजें-- VIPASSANA MEDITATION CENTRE, State Bank of India,, A/c. no. 34241713833 , IFSC SBIN0012931.

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

1. श्री सत्यपाल शर्मा, धम्ममरुधर, जोधपुर के 'कार्यवाहक' केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
2. श्री उत्तमराव पाटील, धुळे; धम्मसरोवर केंद्र के केंद्रीय आचार्य के रूप में सेवा.
3. श्रीमती नीरा कपूर (स.आ.) धम्मसोत वि. केंद्र के आचार्य की सहायता
4. श्रीमती प्रगति ठुब्रीकर, (व.स.आ.) धम्मनाग वि. केंद्र के आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री बसंतलाल पटेल, धम्मबल विपश्यना केंद्र के केंद्र-आचार्य की सहायता
2. श्री विक्रम आदित्य, धम्मसोत विपश्यना केंद्र के केंद्र-आचार्य की सहायता
3. श्री आर.आर. रामकृष्णनन, धम्मकांची, (त.ना.) के केंद्र-आचार्य की सहायता
4. श्री वामन बैंगाने, नागपुर
5. श्री हिरामण राजपूत, धुळे
6. श्री भारत प्रसाद मिश्रा, मुजफ्फरपुर (बिहार)

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री धेंडुप डी. लामा, सिक्किम
2. श्री चंद्रकांत गनेडीवाल, येवतमाल
3. श्रीमती वंदना गवळी, नागपुर
4. श्री विवेक पाल, नई दिल्ली
5. श्रीमती वीना भिवापुरकर, नागपुर
6. श्रीमती वंदना वर्मा, दिल्ली
7. श्री. रोहिताश्व राहुल नागपाल, शाहजहाँपुर, उ. प्र.
8. श्री. राजेंद्र कुमार मेहता, गुड़गांव, हरियाणा
9. श्रीमती अंजली शरना, दिल्ली
10-11. श्री. सत्यजीत ठाकुर एवं श्रीमती जानकी ठाकुर, लखनऊ, उ. प्र.
12. Ms. Rema Sukumaran, HONG KONG

-- श्री सचिन नातू, (SAT) ICCCC Member Incharge of India, Sri Lanka, UAE and Africa

बाल-शिविर शिक्षक

1-2. श्री देवन शाह एवं श्रीमती शालिनी श्रीनिवासन, ऑरोविल, तमिलनाडु
3. श्रीमती सोनल मेहता, मदुराई
4. कु. काजल मेहता, मदुराई
5. श्री के. बालचंदर, पांडिचेरी
6. श्री एम.आर.एस. विजय सुंदर, पांडिचेरी
7. श्रीमती एस. करपहवल्ली, चेन्नई
8. कु. हेमा एन. बी., बैंगलोर
9. श्री सुनील देशमुख, वर्धा
10. श्री मनोज सोनावणे, वर्धा
11. श्री राजहंस वंजारी, नागपुर
12. श्री रामदासजी भास्कर, नागपुर
13. श्री विनोद वाकडे, गोंदिया
14. श्री उमेश कांबले, गोंदिया
15. कु. सुष्मा मेश्राम, गोंदिया
16. श्रीमती नमिता वालदे, गोंदिया
17. श्रीमती सुजाता प्रवीण गजभिये, कोल्हापुर
18. श्री सुहास भोसले, कोल्हापुर
19. श्रीमती पूनम राजुल, कोल्हापुर
20. श्रीमती मेघना आयरे, चिपलूण
21. श्रीमती सुष्मा पंडितराव हरदास, कराड
22. श्रीमती शिल्पा वासुदेव धोंगडी, कराड
23. श्रीमती संजीवनी अशोक पवार, कराड
24. कु. मोनाली शिंदे, कराड
25. श्रीमती सुवर्णा संजय भोसले, कराड
26. श्री दीपक पाटिल, कराड
27. श्री दिनेश क्षत्रिया, कराड
28. श्री चंद्रकांत हवलदार, कराड
29. श्री अरूण कोली, कराड
30. श्रीमती अकांक्षा जाधव, रत्नागिरी
31. कु. नेहा लोणे, पुणे
32. कु. देवल कोटक, अहमदाबाद
33. श्रीमती लीलावती वाघेला, अहमदाबाद
34. श्री संदीप पटेल, अहमदाबाद
35. कु. आशा मकवाणा, अहमदाबाद
36. श्रीमती प्रविणा प्रजापति, अहमदाबाद
37. श्री कौशिक पटेल, मेहसाणा
38. कु. श्वेता राजानी, जयपुर
39. श्री राज कुमार गौतम, जयपुर
40. Ms. Pao Yeh Li, Taiwan
41. Mrs. Nuntiya Jaravechason, Thailand
42. Mr. Andrew Wong Ye Him, Hong Kong
43. Mr. Tsang Tsz Cheong (William), Hong Kong
44. Ms. Katy Hanser Switzerland
45. Ms. Inga Kuehn Germany

New responsibility – RCCC

1. श्रीमती आशा लौंगानी, (स.आ.) उत्तरी राजस्थान की क्षेत्रीय बालशिविर समन्वयक
2. Mrs Dechen Wangmo -CCT RCCC Leh Ladakh.

"धम्म के 50 साल"

श्री सुराना जी के मार्गदर्शन में एक टीम, "धम्म के 50 साल" पर पूज्य गुरुजी और पूज्य माताजी से जुड़े कथानकों पर काम कर रही है। इसमें आप जैसे लंबे समय से धम्म से जुड़े हुए लोगों से हरसंभव योगदान की आवश्यकता है। यदि आप के पास कोई महत्त्वपूर्ण वार्तालाप, विशिष्ट आख्यान-उपाख्यान, फोटो, ऑडियो, विडियो आदि हो तो कृपया अवश्य भेजें या लिखें। आवश्यकतानुसार उपयोग किया जायगा। **संपर्कः** रामप्रताप यादव, विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, जिला- नाशिक. WhatsApp no. 7977380198. Email: 50yearsofdhamma@vridhamma.org

विपश्यी साधकों की धम्म-यात्रा

भारत में धम्म-आगमन की 50वी जयंती पर विपश्यी साधकों की सुविधा के लिए 1000 यात्रियों के लिए तीर्थ-यात्राओं का कार्यक्रम निश्चित किया गया है। जिसकी पहली खेप 31 जनवरी, 2019 की रात में मुंबई से स्लीपर क्लास रेलगाड़ी से वाराणसी के लिए होगी। 1 से 11 फरवरी तक सभी धम्म स्थानों जैसे सारनाथ, बोधगया, राजगीर, नालंदा, पटना, वैशाली, श्रावस्ती, कुशीनगर, कपिलवस्तु आदि की यात्रा वातानुकूलित बस से पूरी की जायगी। बस का अंतिम पड़ाव 11 की रात गया स्टे. तक छोड़ना होगा फिर गया से मुंबई रेलगाड़ी द्वारा 13 को पहुँचेंगे। यूं एक के बाद एक यात्रायें चलती रहेंगी। यात्रा का पूरा खर्च लगभग 45 से 50 हजार के बीच आयेगा। प्रत्येक स्थान पर विहारों व होटलों आदि में रात्रि-विश्राम एवं भोजनादि की व्यवस्था होगी। प्रमुख स्थानों पर ध्यान, गुरुजी के प्रवचन, वंदना आदि का कार्यक्रम होता रहेगा। इच्छुक व्यक्ति अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्क करें फोन नं.:** +91-7506943663.

विश्व विपश्यना पगोडा पर विशेष कार्यक्रम

इस स्वर्ण जयंती पर्व पर विश्व विपश्यना पगोडा में 29-30 जनवरी, 2019 को विशेष कार्यक्रम रखा गया है, जिसकी विस्तृत जानकारी अगले अंक में दी जायगी।

एक दिवसीय शिविर : मुंबई की पंचायती वाड़ी में

31 जनवरी को दक्षिण मुंबई की पांजरापोल स्थित प्रसिद्ध धर्मशाला पंचायत वाड़ी में एक दिवसीय शिविर हो रहा है। विवरण अगले अंक में...

सूचनाः कुछ तकनीकी कारणों से पिछले दो अंक प्रकाशित नहीं हो पाये। कृपया इसी अंक को सितंबर-अक्तूबर का मान कर पढ़े। शेष कार्यक्रम भी अगले अंक में पढ़ें। धन्यवाद!

ग्लोबल पगोडा में सन 2018-19 के महासंघदान और एक-दिवसीय महाशिविर के आयोजन

रविवार 13 जनवरी, 2019 को पूज्य माताजी की **पुण्य-तिथि** *(5 जनवरी)* एवं सयाजी ऊ बा खिन की **पुण्य-तिथि** *(19 जनवरी)* के उपलक्ष्य में **पगोडा** परिसर में प्रातः **9:30** बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-1. Mr Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोनः 022-62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

एक दिवसीय महाशिविरः प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

जाति वर्ण का, वर्ग का, जहां भेद ना होय।
जो सबका, सबके लिए, शुद्ध धरम है सोय।।

संप्रदाय या जाति का, जहां भेद ना होय।
शुद्ध सनातन धर्म है, वंदनीय है सोय।।

ऊंच-नीच नहिं धर्म है, जात-पांत नहिं धर्म।
साम्यभाव ही धर्म है, ऐक्यभाव ही धर्म।।

जाति-वर्ण के नाम पर, फैला अत्याचार।
सदाचार गर्हित हुआ, पूजित मिथ्याचार।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

भाव भगति भरम्यो रह्यो, समझ न पायो सांच।
मिथ्या मत रो मिरगलो, कोसां भरी कुळांच।।

यो माटी रो पूतळो, रुळसी राख्यां रेत।
सागै जासी धरम ही, परलोकां सुख हेत।।

कितनां रो होयो भलो, कितनां रो कल्याण।
धरम सदा मंगळ करै, धरम बड़ो बलवान।।

धरम छत्र ताण्यां खड्यो, तूं क्यूं चिंतित होय।
राख धरम रो आसरो, नित मंगळ ही होय।।

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2562, कार्तिक पूर्णिमा, 23 नवंबर, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 10 NOVEMBER, 2018, DATE OF PUBLICATION: 23 NOVEMBER, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org